|  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- |
| PÀæ.¸ÀA | ¥ÀæPÀgÀt £ÀA. | UÁæªÀÄ | ¸ÀªÉð £ÀA. | µÀgÀ |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 168/18-19 | UÀÄqÀØzÀgÀAUÀªÀéÀ£ÀºÀ½î | ¸À.£ÀA. 97 gÀ°è 4.00 JPÀgÉ |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 177/22-23 | vÉÆÃ¥ÀÄgÀªÀiÁ½UÉ | ¸À.£ÀA. 837gÀ°è 15.25 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 71/21-22 | vÀªÀÄlPÀ®Äè | ¸À.£ÀA. 14/2© 1.05 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 91/22-23 | zÀ¼ÁªÁ¬ÄºÀ½î | ¸À.£ÀA. 29/3J gÀ°è |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 80/22-23 | ªÉÄÃUÀ¼ÀºÀ½î | ¸À.£ÀA. 32gÀ°è 0.39 UÀÄAmÉ |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 92/22-23 | UÉÆÃqÀ§£Á¼ï | ¸À.£ÀA. 162/2 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 89/20-21 | vÉÆÃ¥ÀÄgÀªÀiÁ½UÉ | ¸À.£ÀA. 183/6, 168/2, 176/2 181/4, 183/8 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 150/21-22 | ªÀÄºÀzÉÃªÀ£ÀPÀmÉÖ | ¸À.£ÀA. 37/2, 18/1, 22/15 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 70/22-23 | eÁ£ÀPÉÆAqÀ | ¸À.£ÀA. 83/3 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 35/21-22 | ªÀÄzÀPÀj¥ÀÄgÀ | ¸À.£ÀA. 126/1¹ |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 95/22-23 | PÀÄgÀÄªÀÄgÀrPÉgÉ | ¸À.£ÀA. 4/1gÀ°è 6.19 UÀÄAmÉ |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 43/21-22 | zÁåªÀÄªÀé£ÀºÀ½î | ¸À.£ÀA. 317, 319 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 153/20-21 | ªÀÄzÀPÀj¥ÀÄgÀ | ¸À.£ÀA. 18/2© |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 85/22-23 | G¥Àà£ÁAiÀÄPÀ£ÀºÀ½î | ¸À.£ÀA. 1/7, 6/1 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 72/21-22 | r.J¸ï.ºÀ½î | ¸À.£ÀA. 420 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 92/22-23 | UÉÆÃ£ÀÆgÀÄ | ¸À.£ÀA. 10 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 67/22-23 | PÀÄgÀÄªÀÄgÀrPÉgÉ | ¸À.£ÀA. 91/2 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 66/22-23 | PÀÄgÀÄªÀÄgÀrPÉgÉ | ¸À.£ÀA. 91/2 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 131/21-22 | ªÀÄ®è¥ÀÄgÀ | ¸À.£ÀA. 119/2 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 105/19-20 | ¸ÉÆAqÉPÉÆ¼À | ¸À.£ÀA. 58/4 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 99/20-21 | PÀÄgÀÄªÀÄgÀrPÉgÉ | ¸À.£ÀA. 74 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 127/21-22 | PÀÄgÀÄªÀÄgÀrPÉgÉ | ¸À.£ÀA. 46/13 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 114/21-22 | CUÀ¸À£ÀPÀ®Äè | ¸À.£ÀA. 8/3 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 114/20-21 | CUÀ¸À£ÀPÀ®Äè | ¸À.£ÀA. 8/3 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 134/21-22 | ¸ÉÆAqÉPÉÆ¼À | ¸À.£ÀA. 58/4 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 136/21-22 | ¸ÉÆAqÉPÉÆ¼À | ¸À.£ÀA. 58/4 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 137/21-22 | ¸ÉÆAqÉPÉÆ¼À | ¸À.£ÀA. 58/4 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 135/21-22 | ¸ÉÆAqÉPÉÆ¼À | ¸À.£ÀA. 58/4 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 57/22-23 | ªÀÄºÀzÉÃªÀ£ÀPÀmÉÖ | ¸À.£ÀA. 20/4 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 62/22-23 | UÉÆqÀ§UÀ£Á¼ï | ¸À.£ÀA. 266/2 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 144/21-22 | ªÀÄ®è£ÀPÀmÉÖ | ¸À.£ÀA. 18/3J2© |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 44/18-19 | r.J¸ï,ºÀ½î | ¸À.£ÀA. 548/2 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 2/22-23 | f.Dgï ºÀ½î | ¸À.£ÀA. 2/2J2 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 1/22-23 | f.Dgï ºÀ½î | ¸À.£ÀA. 2/2 ¥sÉÊQ |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 39/21-22 | zÁåªÀÄªÀé£ÀºÀ½î | ¸À.£ÀA. 658/1 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 26/22-23 | gÀA¥ÀÄgÀ | ¸À.£ÀA. 1/2¦2 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 128/21-22 | zÁåªÀÄªÀé£ÀºÀ½î | ¸À.£ÀA. 117 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 101/21-22 | eÉÆÃraPÉÌÃ£ÀºÀ½î | ¸À.£ÀA. 597/1 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 143/21-22 | ªÉÄÃUÀ¼ÀºÀ½î | ¸À.£ÀA. 7/3, 20/4 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 52/21-22 | dUÀzÁ½¥ÀÄgÀ | ¸À.£ÀA. 9/2gÀ°è 0.36 UÀÄAmÉ |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 35/20-21 | ªÀÄzÀPÀj¥ÀÄgÀ | ¸À.£ÀA. 13/1J1, 105/1¹ |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 73/20-21 | avÀæzÀÄUÀð | ¸À.£ÀA. 108 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 53/20-21 | ªÀÄzÀPÀj¥ÀÄgÀ | ¸À.£ÀA. 48/1¹ |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 71/17-18 | r.J¸ï. ºÀ½î | ¸À.£ÀA. 403/1 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 15,45/21-22 | ºÀwÛPÀmÉÖ | ¸À.£ÀA. 8/16 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 91/20-21 | £ÉÃgÀ®UÀÄA¢ | ¸À.£ÀA. 5/1 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 146/20-21 | CUÀ¸À£ÀPÀ®Äè | ¸À.£ÀA. 2/1J1J1 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 11/21-22 | CUÀ¸À£ÀPÀ®Äè | ¸À.£ÀA. 18/2J2 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 26/20-21 | ªÀÄzÀPÀj¥ÀÄgÀ | ¸À.£ÀA. 44/1©, 44/1J2, 44/1J3 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 199/20-21 | vÀªÀÄlPÀ®Äè | ¸À.£ÀA. 33/2, 1.36 JPÀgÉ |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 516/20-21 | dUÀzÁ½¥ÀÄgÀ | ¸À.£ÀA. 9 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 121/21-22 | r.J¸ï ºÀ½î | ¸À.£ÀA. 353 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 369/21-22 | UÉÆÃ£ÀÆgÀÄ | ¸À.£ÀA. 25/2© |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 472/20-21 | zÁåªÀÄªÀé£ÀºÀ½î | ¸À.£ÀA. 617/2 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 83/17-18 | f.Dgï ºÀ½î | ¸À.£ÀA. 97gÀ°è 4.20 JPÀgÉ |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 117/21-22 | zÁåªÀÄªÀé£ÀºÀ½î | ¸À.£ÀA. 399, 543/1©, 381/3 364/10 410/1 EvÀgÉ |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 416/20-21 | ªÀÄºÁzÉÃªÀ£ÀPÀmÉÖ | ¸À.£ÀA. 17/3 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 58/19-20 | ªÀÄzÀPÀj¥ÀÄgÀ | ¸À.£ÀA. 1/3, 1/6 ¨sÀÆ¸Áé¢£ÀzÀ §UÉÎ |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 489/20-21 | UÉÆqÀ§UÀ£Á¼ï | ¸À.£ÀA. 122 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 404/20-21 | ºÀÄ°UÀÄA¢ | ¸À.£ÀA. 10/2 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 94/21-22 | f.Dgï. ºÀ½î | ¸À.£ÀA. 121 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 147/21-22 | zÀ¼ÀªÁ¬ÄºÀ½î | ¸À.£ÀA. 21/4, 21/5 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 313/20-21 | ¥ÀAqÀgÀºÀ½î UÁæªÀÄzÀ d«ÄÃ¤£À ªÀiÁ»w PÉÆÃj | --- |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 303/20-21 | PÀÄAaUÀ£Á¼ï | ¸À.£ÀA. 39/3J |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 407/20-21 | JA.PÉ ºÀnÖ | ¸À.£ÀA. 122gÀ°è ºÉ¸ÀgÀÄ wzÀÄÝ¥Àr |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 414/18-19 | JA.PÉ. ºÀnÖ | ¸À.£ÀA. 50/1© |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 86/20-21 | UÉÆÃ£ÀÆgÀÄ | ¸À.£ÀA. 154/1 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 444/19-20 | f.Dgï ºÀ½î | ¸À.£ÀA. 92/2J2, 92/2© |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 488/20-21 | PÀªÁrUÀgÀºÀnÖ | ¸À.£ÀA. 13/4J1 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 399/20-21 | zÁåªÀÄªÀé£ÀºÀ½î | ¸À.£ÀA. 654/1 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 456/20-21 | C£ÉßÃºÁ¼ï | ¸À.£ÀA. 55/1© |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 25/21-22 | dUÀzÁ½¥ÀÄgÀ | ¸À.£ÀA. 3/5 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 112/21-22 | f.Dgï ºÀ½î | ¸À.£ÀA. 352 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 125/20-21 | gÁA¥ÀÄgÀ | ¸À.£ÀA. 1/7 gÀ°è 1.05 JPÀgÉ |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 364/19-20 | ªÉÄÃzÉºÀ½î | ¸À.£ÀA. 795/671 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï -/21-22 | eÉÆÃraPÉÌÃ£ÀºÀ½î | ¸À.£ÀA. 148gÀ ¸ÀÜ¼À vÀ¤PÉ §UÉÎ |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 491/22-23 | PÉ¼ÀUÉÆmÉ | ¸À.£ÀA. 17/2©19 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 506/22-23 | vÀªÀÄlPÀ®Äè | ¸À.£ÀA. 110 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï -/22-23 | ªÀÄzÀPÀj¥ÀÄgÀ | ¸À.£ÀA.144/1J ºÁUÀÄ 144/1© gÀ d«ÄÃ¤£À ªÀÄzÉå zÁj §UÉÎ |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 293/22-23 | ¥ÀAqÀgÀºÀ½î | ¸À.£ÀA. 52/1J |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 390/22-23 | f.Dgï ºÀ½î | ¸À.£ÀA. 208/6 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 225/22-23 | PÀ¯ÉèÃ£ÀºÀ½î | ¸À.£ÀA. 14 ºÉÆ¸À £ÀA. 119 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 297/22-23 | ªÀÄºÁzÉÃªÀ£ÀPÀmÉÖ | ¸À.£ÀA. 63/3 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 527/20-21 | ªÉÄÃUÀ¼ÀºÀ½î | ¸À.£ÀA. 23/1© 23/12 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 343/21-22 | vÀªÀÄlPÀ®Äè | ¸À.£ÀA. 89/1 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 515/20-21 | ªÉÄzÉºÀ½î | ¸À.£ÀA. 42/4 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 427/21-22 | ªÀiÁ£ÀAV | ¸À.£ÀA. 110/2 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 122/21-22 | PÉ¼ÀUÉÆmÉ | ¸À.£ÀA. 33/2©1© |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 57/21-22 | ªÀÄzÀPÀj¥ÀÄgÀ | ¸À.£ÀA. 10/2 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 195/21-22 | zÁåªÀÄªÀé£ÀºÀ½î | ¸À.£ÀA. 512/3 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 181/22-23 | ¥ÀAqÀgÀºÀ½î | ¸À.£ÀA. 45/2©2, 45/2©3 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 470/21-22 | f.Dgï. ºÀ½î | ¸À.£ÀA. 71/3 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 194/22-23 | zÀ¼ÀªÁ¬ÄºÀ½î | ¸À.£ÀA. 29/2J¦2 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 405/21-22 | PÀÄgÀÄªÀÄgÀrPÉgÉ | ¸À.£ÀA. 75 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 33/19-20 | zÁåªÀÄªÀé£ÀºÀ½î | ¸À.£ÀA. 630/6 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 336/20-21 | zÁåªÀÄªÀé£ÀºÀ½î | ¸À.£ÀA. 543/1©, 381/3 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 447/19-20 | zÁåªÀÄªÀé£ÀºÀ½î | ¸À.£ÀA. 376/2 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 168/21-22 | zÁåªÀÄªÀé£ÀºÀ½î | ¸À.£ÀA. 292/2 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 229/22-23 | ªÉÄzÉºÀ½î | ¸À.£ÀA. 44, 46, 47gÀ C¼ÀvÉ §UÉÎ |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï -/22-23 | ªÀÄzÀPÀj¥ÀÄgÀ | ¸À.£ÀA. 87/3J, 87/3© , 87/3r 37/3¹ gÀ°è ¨sÀÆ¸Àé¢£ÀzÀ §UÉÎ |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 542/22-23 | PÉ£ÉßºÀqÀ®Ä | ¸À.£ÀA. 96 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 110/22-23 | eÁ£ÀPÉÆAqÀ | ¸À.£ÀA. 68/1, 69/2 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 312/22-23 | r.J¸ï. ºÀ½î | ¸À.£ÀA. 817(471) |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 323/21-22 | gÁA¥ÀÄgÀ | ¸À.£ÀA. 1/2¦2 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 51/22-23 | PÉ¼ÀUÉÆmÉ | ¸À.£ÀA. 78/4¹5 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 75/21-22 | ¸ÉÆÃAqÉPÉÆ¼À | ¸À.£ÀA. 163/2 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 116/22-23 | PÉ£ÉßºÀqÀ®Ä | ¸À.£ÀA. 96 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 439/21-22 | ¸ÉÆ®è¥ÀÄgÀ | ¸À.£ÀA. 2/11/4 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 232/21-22 | ªÀÄ®è£ÀPÀmÉÖ | ¸À.£ÀA. 25/1J1, 1J2, 1J3, 1J4 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 194/21-22 | UÉÆÃ£ÀÆgÀÄ | ¸À.£ÀA. 15 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 334/21-22 | ¸ÀdÓ£ÀPÉgÉ | ¸À.£ÀA. 17 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 374/21-22 | ªÀÄºÁzÉÃªÀ£ÀPÀmÉÖ | ¸À.£ÀA. 23/4© |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 12/22-23 | ¥À®èªÀUÉgÉ | ¸À.£ÀA. 22/2J (22/2©) |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 24/22-23 | ¥À®èªÀUÉgÉ | ¸À.£ÀA. 38 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 30/22-23 | ªÀÄºÁzÉÃªÀ£ÀPÀmÉÖ | ¸À.£ÀA. 32/2 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 12/23-24 | dUÀzÁ½¥ÀÄgÀ | ¸À.£ÀA. 52 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 11/23-24 | UÉÆÃ£ÀÆgÀÄ | ¸À.£ÀA. 5/1, 5/4, 5/5, 5/8, 5/10, 5/11 ¨sÀÆ¸Áé¢£ÀzÀ §UÉÎ |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 13/23-24 | UÉÆÃ£ÀÆgÀÄ | ¸À.£ÀA. 11/©37 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 358/22-23 | gÁA¥ÀÄgÀ | ¸À.£ÀA. 1/7 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 542/22-23 | PÉ¼ÀUÉÆmÉ | ¸À.£ÀA. 78/4¹1 , 78/4¹5 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 314/22-23 | ¸ÉÆ®è¥ÀÄgÀ | ¸À.£ÀA. 24/3 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 393/22-23 | zÁåªÀÄªÀé£ÀºÀ½î | ¸À.£ÀA. 153/8 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 137/22-23 | f.Dgï. ºÀ½î | ¸À.£ÀA. 273/2 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 322/22-23 | PÁnºÀ½î | ¸À.£ÀA. 3/2, 44/2 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 15/22-23 | PÀÄgÀÄªÀÄgÀrPÉgÉ | ¸À.£ÀA. 75 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 167/22-23 | f.Dgï ºÀ½î | ¸À.£ÀA. 342/© |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï 58/22-23 | r.J¸ï. ºÀ½î | ¸À.£ÀA. 462/3 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï 73/21-22 | PÀÄAaUÀ£Á¼ï | ¸À.£ÀA.35 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ)¹,Dgï168/20-21 | eÉ.J£ï.PÉÆÃmÉ | ¸À.£ÀA.300/2 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï155/21-22 | f.Dgï ºÀ½î | ¸À.£ÀA186/1 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï152/21-22 | avÀæzÀÄUÀð | ¸À.£ÀA71/1,90/6 |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï156/15-16 | PÉ¼ÀUÉÆÃmÉ | ¸À.£ÀA.115/1©2©1, 117/1© |  |
|  | Dgï.Dgï.n(SÁvÉ) ¹.Dgï/25/22-23 | CwÛPÀmÉÖ | ¸À.£ÀA.8/16 gÀ°è 1-00 JPÀgÉ SÁvÉ §UÉÎ |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï/234/22-23 | ªÉÄzÉºÀ½î | ¸À.£ÀA.45©2 PÉJ¸ïDgïn¹ ¸ÀA¸ÉÜUÉ SÁvÉ ªÀiÁqÀ®Ä PÉÆÃj |  |
|  | Dgï.Dgï.n(wzÀÄÝ) ¹.Dgï/129/20-21 | ªÉÄzÉºÀ½î | ¸À.£ÀA.45©2 PÉJ¸ïDgïn¹ ¸ÀA¸ÉÜUÉ ¨sÀÆ ¸Áé¢üÃ£ÀªÁzÀAvÉ ¥ÀºÀtÂAiÀÄ°è £ÀªÀÄÆ¢¸À®Ä |  |
|  | DgïDgïn ±ÁSÉAiÀÄ ¸ÀÄvÉÆÛÃ¯É PÀqÀvÀ |  |  |  |

ªÉÄÃ®ÌAqÀ PÀæ.¸ÀA.1 jAzÀ PÀæ.¸ÀA.136 gÀ zÁR¯ÉUÀ¼À£ÀÄß ²æÃ ©.JA.gÀªÉÄÃ±ï, ¥Àæ.zÀ.¸À. EªÀjUÉ ªÀ»¹PÉÆnÖgÀÄvÉÛÃ£É.

ªÉÄÃ®ÌAqÀ PÀæ.¸ÀA.1 jAzÀ PÀæ.¸ÀA.136 gÀ zÁR¯ÉUÀ¼À£ÀÄß ²æÃ JA.gÀAUÀ£Áxï, ¥Àæ.zÀ.¸À. EªÀjAzÀ ¥ÀqÉ¢gÀÄvÉÛÃ£É.